(1)

बच्चों की सच्ची कहानियां

नूर वाला चेहरा

Noor Wala Chehra (Hindi)

और दूसरी 4 सच्ची कहानियां मअ़ विडियो गेम्ज़

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नूर वाला चेहरा

1 बच्ची ने जब कूंएं में थूका.....

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मुह़म्मद बिन सुलैमान जज़ूली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : मैं सफ़र पर था, एक मक़ाम पर नमाज़ का वक़्त हो गया, वहां **कूंआं** (Well) तो था मगर डोल (Bucket) और रस्सी (Rope) नहीं थी। मैं इसी फ़िक्र में था कि एक मकान के ऊपर से एक **बच्ची** ने झांका और पूछा : आप क्या तलाश कर रहे हैं ? मैं ने कहा : बेटी ! रस्सी और डोल। उस ने पूछा : आप का नाम ? कहा : **मुह़म्मद बिन**

सुलैमान जज़ूली । बच्ची ने हैरत से कहा : अच्छा आप वोही हैं जिन की शोहरत के डंके बज रहे हैं मगर हाल येह है कि कूंएं से पानी भी बाहर नहीं निकाल सकते ! येह कह कर उस ने कूंएं में थूक दिया, कमाल हो गया ! आनन फ़ानन पानी ऊपर आ गया। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने वुज़ू करने के बा'द उस **बच्ची** से फ़रमाया : बेटी ! सच बताओ तुम ने येह कमाल किस त़रह़ ह़ासिल किया ? कहने लगी : "मैं ब कसरत **दुरूदे पाक** पढ़ती हूं, इसी की ब-र-कत से येह करम हुवा है।" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : उस "**बच्ची**" से **मु-तअस्सिर** हो कर मैं ने वहीं अ़ह्द किया कि **दुरूद शरीफ़** के **मु-तअ़ल्लिक़** किताब लिखूंगा। (फिर उन्हों ने दुरूद शरीफ़ की किताब "**दलाइलुल ख़ैरात**" लिखी) (سعادۃ الدّارین ص۱۵۹) **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की**

उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

आ़शिक़ाने दुरूदो सलाम के लिये एक बेहतरीन इन्आ़म

मीठे मीठे म-दनी मुन्नो और म-दनी मुन्नियो !

سُبْحٰنَ اللہ ! देखा आप ने ! उस म-दनी मुन्नी को हमारे मीठे मीठे **आक़ा** मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ने की कैसी ब-र-कत मिली कि उस के लुआ़ब (या'नी थूक) डालने से कूंएं का पानी बढ़ गया। **भोले भाले म-दनी मुन्नो और म-दनी मुन्नियो !** यहां इस बात का ख़याल रहे कि उस म-दनी मुन्नी पर रब्बुल इ़ज़्ज़त की ख़ास इनायत थी इस लिये उस ने कूंएं में अपना लुआ़ब

(या'नी थूक) डाला, हमें पानी के किसी ह़ौज़ (Pool), तालाब (Pond) या कूंएं वग़ैरा में नहीं थूकना चाहिये। उस म-दनी मुन्नी की त़रह़ हमें भी अपने मक्की म-दनी आक़ा मीठे मीठे **मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ज़ियादा से ज़ियादा **दुरूदे पाक** पढ़ने की आ़दत बनानी चाहिये। हम चाहे खड़े हों, चल रहे हों, बैठे हों या लैटे हुए हों, हमारी कोशिश येही होनी चाहिये कि **दुरूद शरीफ़** पढ़ते रहें। (**मस्अला :** जब भी लैटे लैटे दुरूद शरीफ़ पढ़ें या कोई सा विर्द करें, पाउं समेट लेने चाहिएं)

ज़िक्रो दुरूद हर घड़ी विर्दे ज़ुबां रहे
मेरी फ़ुज़ूल गोई की आ़दत निकाल दो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

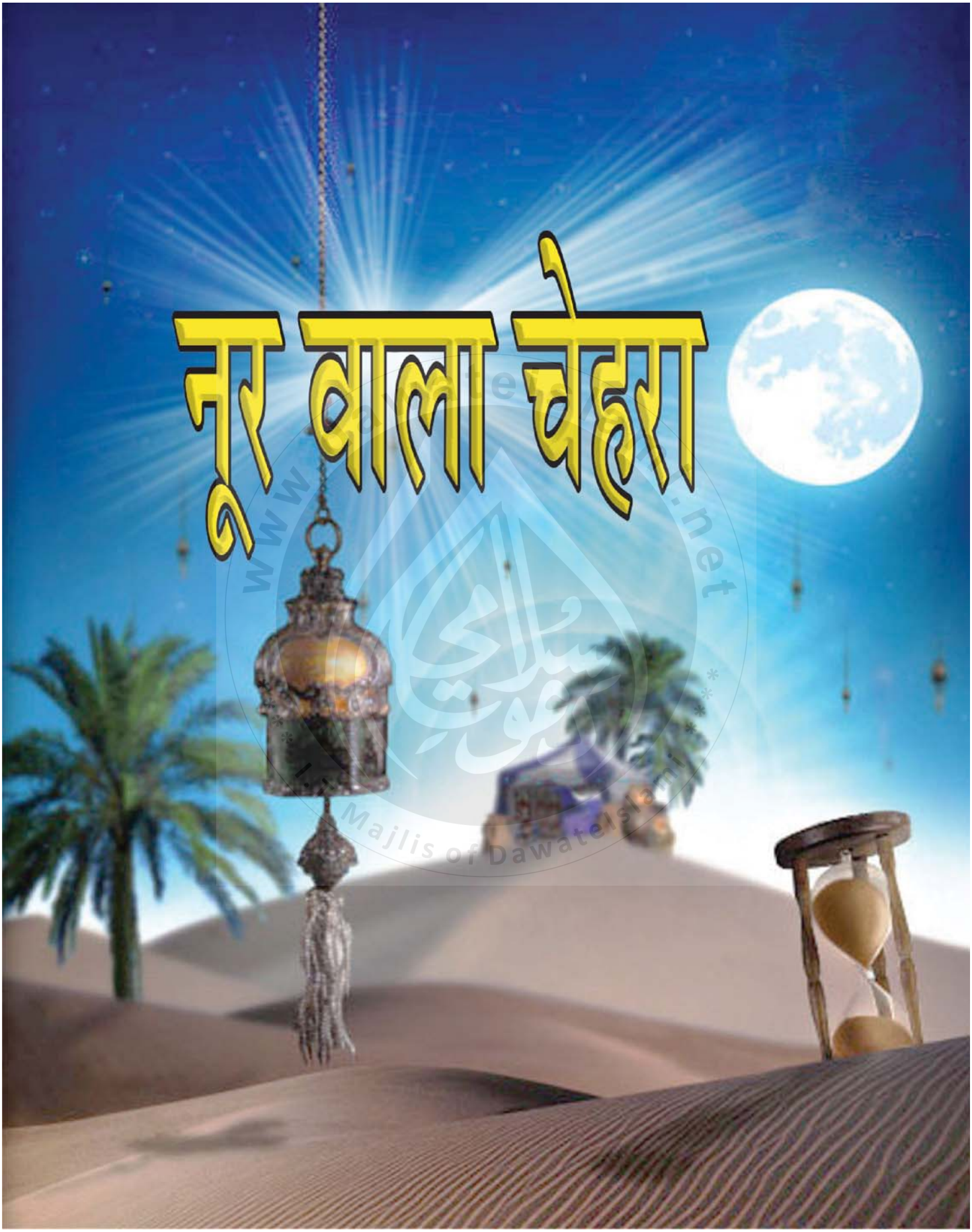
नूर वाला चेहरा

2 नूर वाला चेहरा

अल्लाह तआ़ला के प्यारे नबी **मुह़म्मदे अ़-रबी** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सब से पहले ह़ज़रते बीबी आमिना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने तक़रीबन 7 दिन दूध पिलाया फिर चन्द दिन ह़ज़रते सुवैबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने, इस के बा'द से ह़ज़रते बीबी ह़लीमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने 2 साल की उ़म्र तक दूध पिलाया है। बीबी ह़लीमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا प्यारे प्यारे मक्की म-दनी नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बचपन शरीफ़ के बारे में फ़रमाती हैं :

अल्लाह पाक के प्यारे ह़बीब ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का प्यारा प्यारा **नूर वाला चेहरा** रात के वक़्त इतना ज़ियादा चमकता था कि उजाला करने के लिये चराग़ (Lamp) जलाने की ज़रूरत न होती, एक रोज़ हमारी पड़ोसन उम्मे ख़ौला सा'दिया मुझ से कहने लगी : **ऐ ह़लीमा** ! क्या आप अपने घर में रात के वक़्त आग जलाया करती हैं कि सारी रात आप के घर में से प्यारी प्यारी रोशनी नज़र आती है ! बीबी ह़लीमा फ़रमाती हैं, मैं ने कहा : **येह आग की रोशनी नहीं बल्कि ह़ज़रते मुह़म्मदे म-दनी** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **के नूर वाले चेहरे की रोशनी है।**

(माख़ूज़ अज़ : तफ़्सीरे المنشرح, स. 107)

मीठे मीठे म-दनी मुन्नो और म-दनी मुन्नियो !

अल्लाह तआ़ला ने अपने प्यारे ह़बीब ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **नूर** से पैदा फ़रमाया है। हमारे हुज़ूर सुल्त़ाने दो जहान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बेशक इन्सान तो हैं मगर नूर वाले इन्सान और सारे इन्सानों के सरदार हैं।

नूर वाला आया है हां नूर ले कर आया है

सारे आ़लम में येह देखो कैसा नूर छाया है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुबारक हाथ और बीमार ऊंट या बकरी

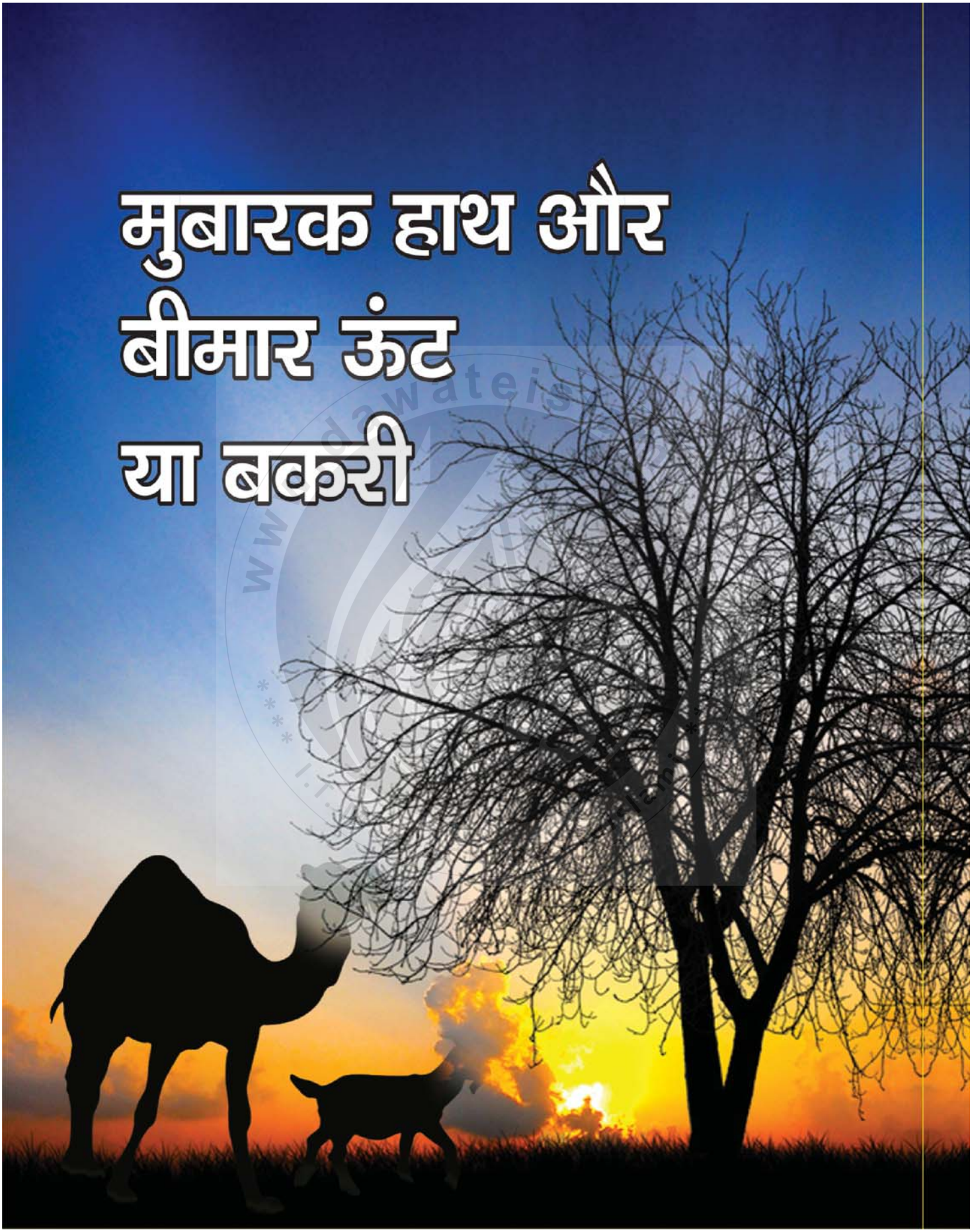

3 मुबारक हाथ और बीमार ऊंट या बकरी

ह़ज़रते बीबी ह़लीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं : **अल्लाह तआ़ला** के नबी ह़ज़रते मुह़म्मदे म-दनी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ले कर जब मैं अपने मकान में दाख़िल हुई तो क़बीलए बनू सा'द के घरों में से कोई घर ऐसा न रहा जिस से हमें **मुश्क** (Musk) **की ख़ुश्बू** न आने लगी हो और लोगों के दिलों में **अल्लाह** के प्यारे ह़बीब ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की **मह़ब्बत** घर कर गई और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ब-र-कत का यक़ीन इस क़दर मज़बूत़ हो गया कि अगर किसी के बदन में कहीं दर्द या तक्लीफ़ हो जाती तो वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हाथ मुबारक ले कर तक्लीफ़ की जगह पर रखता तो **अल्लाह**

तआ़ला के हुक्म से उसी वक़्त ठीक हो जाता, अगर उन का कोई **ऊंट** या **बकरी** बीमार हो जाती तो उस पर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक हाथ फेरते वोह तन्दुरुस्त हो जाती। (السيرة الحلبية ج ١ ص ١٣٥)

मुबारक हाथ के 8 ह़ैरत अंगेज़ कमालात

मीठे मीठे म-दनी मुन्नो और म-दनी मुन्नियो !

देखा आप ने ! **अल्लाह तआ़ला** के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक हाथ की भी क्या ख़ूब बहारें हैं ! आइये ! प्यारे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक हाथ के 8 और मो'जिज़ात आप को सुनाऊं :

❁ एक ग़ज़्वे[1] के मौक़अ़ पर तीर लगने के सबब प्यारे सह़ाबी

1 : या'नी कुफ़्फ़ार से लड़ी जाने वाली ऐसी जंग जिस में हमारे हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शामिल हुए हों उसे "ग़ज़्वा" कहते हैं।

ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की आंख मुबारक बाहर निकल पड़ी, सब त़बीबों के त़बीब, **अल्लाह तआ़ला** के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की आंख अपने मुबारक हाथ में ली और उस की जगह पर रख कर दुआ़ फ़रमाई **तो वोह आंख दुरुस्त हो कर दूसरी आंख से ज़ियादा रोशन हो गई** ❁ एक क़ाफ़िला **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हुवा, उन में से एक शख़्स की त़बीअ़त ख़राब थी, उस को दौरे पड़ते थे। सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस की पीठ पर अपना हाथ मुबारक मार कर (उस मरीज़ के अन्दर मौजूद "बला" से) फ़रमाया : "ऐ **अल्लाह** के दुश्मन निकल जा" फिर उस के चेहरे पर

हाथ मुबारक फेरा तो वोह मरीज़ ऐसा हो गया कि आने वाले क़ाफ़िले में उस से बेहतर कोई नज़र ही न आता था ❁ एक प्यारे सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़तीक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के पाउं की **टूटी हुई पिंडली** (Shin) पर **अल्लाह तआ़ला** के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना हाथ मुबारक फेरा तो ऐसी सह़ीह़ हो गई जैसे कुछ हुवा ही न था ❁ एक प्यारे सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अब्यज़ बिन ह़म्माल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के **चेचक** (या'नी एक बीमारी जिस में मुंह पर दाने निकल आते हैं) वाले चेहरे पर हाथ मुबारक फेरा तो फ़ौरन चेहरा ठीक हो गया और **चेचक** के दानों के निशानात जाते रहे ❁ बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان को

अलग अलग मौक़अ़ पर अपने मुबारक हाथ से लकड़ी या दरख़्त की टहनी (शाख़) दी तो वोह **तलवार** बन गई ! ❁ किसी के चेहरे पर अपना मुबारक हाथ फेरा तो चेहरा रोशन हो गया ❁ किसी बीमार पर हाथ फेरा तो मरज़ दूर होने के साथ साथ उस का बदन **ख़ुश्बूदार** भी हो गया ❁ एक सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबुल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सीने पर हाथ मुबारक फेरा तो **ह़ाफ़िज़ा** (Memory) एक दम मज़बूत़ हो गया। (البرھان ص۳۷۳ تا ۳۷۹ ملخصاً)

ज़रा चेहरे से पर्दा तो हटाओ या रसूलल्लाह !

हमें दीदार तो अपना कराओ या रसूलल्लाह !

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

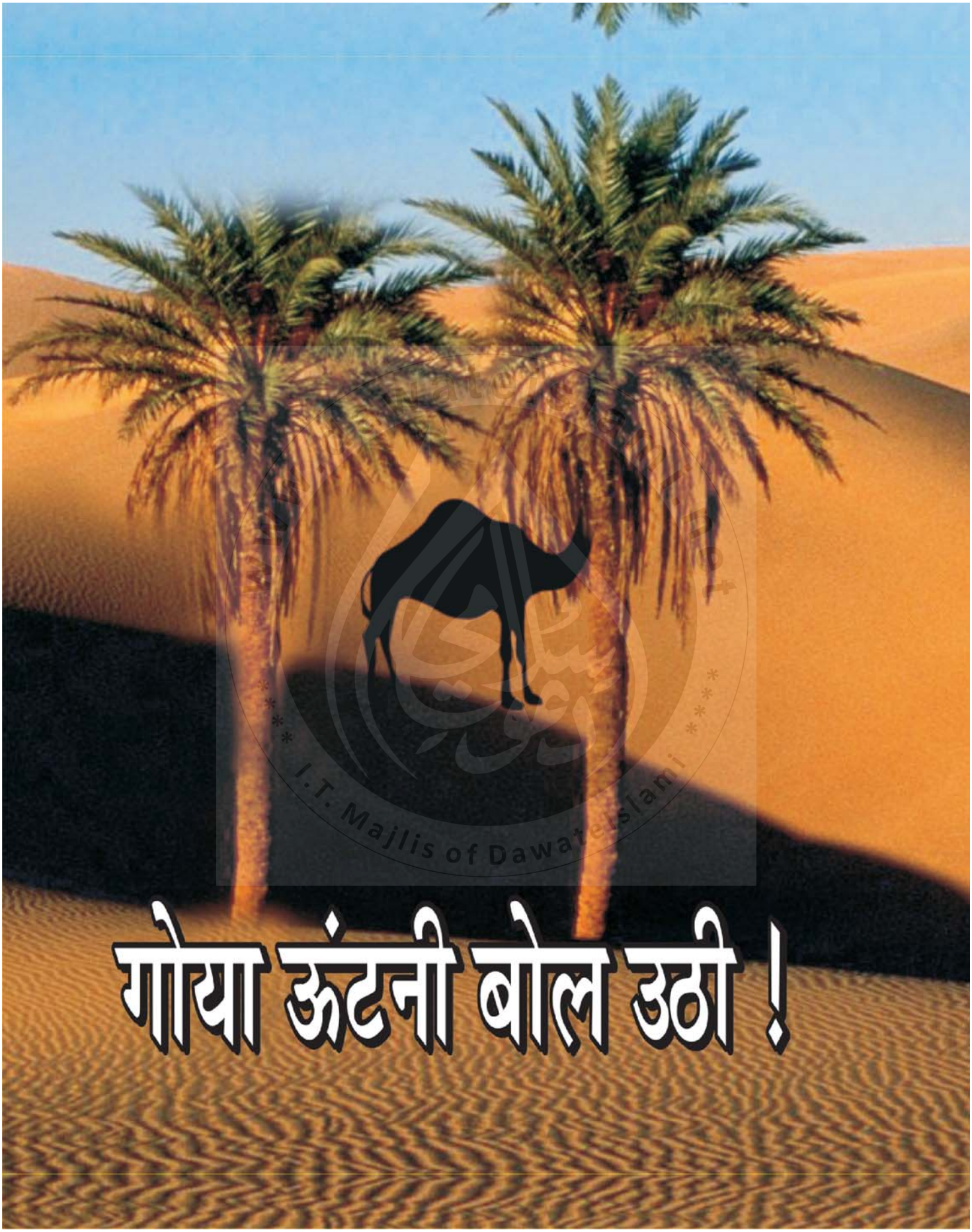
गोया ऊंटनी बोल उठी !

4 गोया ऊंटनी बोल उठी !

अल्लाह तआ़ला के प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचाजान के शहज़ादे और बहुत ही प्यारे सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : **बचपन शरीफ़** में एक बार सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मक्के शरीफ़ की घाटियों (या'नी दो पहाड़ों के दरमियानी रास्ते) में अपने दादाजान ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से जुदा हो गए, (बा'दे तलाश) दादाजान वापस मक्के शरीफ़ आए और का'बा शरीफ़ के पर्दों से लिपट कर हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मिल जाने के लिये रो रो कर दुआ़एं मांगने लगे। इसी दौरान मश्हूर काफ़िर अबू जह्ल **ऊंटनी** पर सुवार अपनी बकरियों के रेवड़ (Herd of goats) से वापस आ रहा था, उस ने हमारे प्यारे आक़ा **मुह़म्मदे** मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देख लिया, अबू जह्ल

ने अपनी **ऊंटनी** बिठाई और सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने **पीछे** बिठा कर **ऊंटनी** को उठाना चाहा तो वोह न उठी ! फिर जब अपने **आगे** बिठाया तो **ऊंटनी** खड़ी हो गई और गोया अबू जह्ल से कहने लगी : **"अरे बे वुक़ूफ़** ! येह तो इमाम हैं, **मुक़्तदी** के पीछे कैसे हो सकते हैं !" ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا मज़ीद फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَاوَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को जिस त़रह़ फ़िरऔ़न के ज़रीए़ उन की अम्मीजान तक पहुंचाया इसी त़रह़ अबू जह्ल के ज़रीए़ सरकारे दो जहान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने दादाजान तक पहुंचाया। (روح المعانی، جزء ۳۰ ص ۵۳۲)

इस सच्ची कहानी से मिलने वाले म-दनी फूल

मीठे मीठे म-दनी मुन्नो और म-दनी मुन्नियो ! देखी आप ने **अल्लाह तआ़ला** की क़ुदरत ! अबू जह्ल के ज़रीए़

अल्लाह तआ़ला ने अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उन के दादाजान तक पहुंचा दिया। यक़ीनन **अल्लाह तआ़ला** जो चाहता है वोह करता है। येह भी मा'लूम हुवा कि जानवर तो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम समझते हैं मगर बुरा हो उन ना लाइक़ इन्सानों का जो ता'ज़ीमे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नहीं समझते। वलिय्ये कामिल और सच्चे आ़शिक़े रसूल आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अपने ना'तिया दीवान "ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़" सफ़ह़ा 112 पर फ़रमाते हैं :

अपने मौला की है बस शान अ़ज़ीम जानवर भी करें जिन की ता'ज़ीम
संग करते हैं अदब से तस्लीम पेड़ सज्दे में गिरा करते हैं

शर्ह़े कलामे रज़ा : या'नी हमारे आक़ा व मौला मक्के मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी शान तो देखो ! जानवर इन का एह़तिराम करते हैं, पथ्थर अदब से सलाम करते हैं और दरख़्त इन्हें सज्दा करते हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

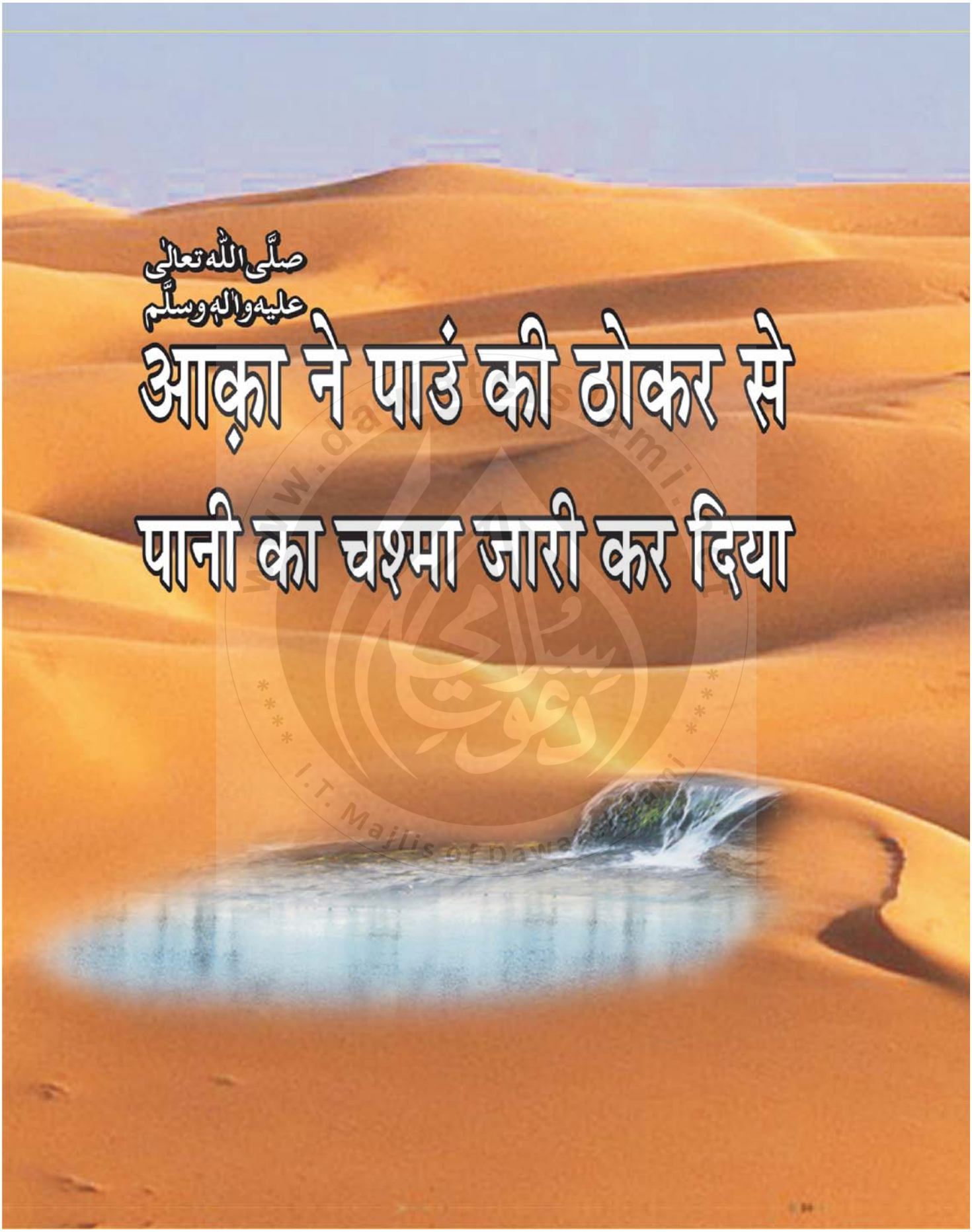
صلَّی اللہ تعالٰی
علیہ والہٖ وسلَّم
आक़ा ने पाउं की ठोकर से
पानी का चश्मा जारी कर दिया

5 आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पाउं की ठोकर से पानी का चश्मा जारी कर दिया

अल्लाह तआ़ला के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा अबू त़ालिब का कहना है कि एक मर्तबा मैं अपने भतीजे या'नी **नबिय्ये पाक** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ "**ज़ुल मजाज़**" के मक़ाम पर था कि अचानक मुझे प्यास लगी। मैं ने **मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे भतीजे ! मुझे **प्यास** लगी है।" मैं ने उन से येह बात इस लिये नहीं कही थी कि उन के पास पानी वग़ैरा था बल्कि सिर्फ़ अपनी परेशानी ज़ाहिर करने के लिये कह दिया था। अबू त़ालिब कहते हैं कि मेरी बात सुन कर वोह फ़ौरन अपनी सुवारी से नीचे उतरे और इर्शाद फ़रमाया : "ऐ चचा !

क्या प्यास लगी है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां । **येह सुन कर ह़ज़रते मुह़म्मद** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **ने अपनी मुबारक एड़ी ज़मीन पर मारी जिस की ब-र-कत से उस मक़ाम से एक दम पानी निकल पड़ा !** फिर मुझ से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ चचा ! पानी पी लो," तो मैं ने वोह पानी पिया ।

(الطبقاتُ الکبری لابن سعد ج ۱ ص ۱۲۱، ابــنِ عَسـاکِـر ج ٦٦ ص ۳۰۸)

पाउं के नीचे के जोड़ की उभरी हुई हड्डी को **टख़्ना** (Ankle) और टख़्ने के नीचे पैर की गद्दी का ह़िस्सा **एड़ी** (Heel) कहलाता है ।

तेरी ठोकर से चश्मा या रसूलल्लाह हुवा जारी
करम से अपने मेरी दूर फ़रमा मुश्किलें सारी

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मैं विडियो गेम का आ़दी था

मैं विडियो गेम का आ़दी था

शकर गढ़ ज़िलअ़ नारोवाल (सूबए पंजाब पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई का बयान है कि मैं बचपन में **विडियो गेम** में रोज़ाना घन्टों वक़्त ज़ाएअ़ किया करता था, नमाज़ों की अदाएगी का कोई मा'मूल नहीं था। मेरी क़िस्मत का सितारा उस वक़्त चमका जब मेरे वालिदे मोहतरम ने मुझे **मद्र-सतुल मदीना** में दाख़िल करवा दिया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه मैं ने वहां पहले कुरआने पाक नाज़िरा ख़त्म किया, इस के बा'द हाफ़िज़े कुरआन बना और साथ ही साथ मेरी अख़्लाक़ी तरबिय्यत का भी सिल्सिला हुवा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه दा'वते इस्लामी के **मद्र-सतुल मदीना** की ब-र-कत से मैं पंजवक़्ता नमाज़ों का पाबन्द हो गया और सुन्नतों भरा म-दनी लिबास पहनने लगा। कल तक पांचों नमाज़ें छोड़ देने वाला

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से अब तहज्जुद और इश्राक़ व चाश्त के नवाफ़िल की बहारें लूटने वाला बन गया। जब मुझे दा'वते इस्लामी की ब-र-कतें मिलीं तो मैं ने एक म-दनी मुन्ने के वालिद साहिब पर इन्फ़िरादी कोशिश की, कि आप भी अपने बेटे को **मद्र-सतुल मदीना** में दाख़िल करवा दीजिये। पहले तो उन्हों ने इन्कार किया फिर जब मैं ने उन्हें अपनी मिसाल दी कि मैं कल तक नमाज़ नहीं पढ़ता था, नंगे सर घूमता था मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰه आज दा'वते इस्लामी के तुफ़ैल मेरे सर पर इमामा शरीफ़ है और मैं पांचों नमाज़ों की पाबन्दी करने वाला बन गया हूं तो उन्हों ने अपने बेटे को **मद्र-सतुल मदीना** में दाख़िला दिलवा दिया जहां उस ने पहले कुरआने करीम नाज़िरा पढ़ा और अब ह़िफ़्ज़ करने की सआ़दत पा रहा है जब कि मैं ता दमे तह़रीर اَلْحَمْدُ لِلّٰه **जामिअ़तुल मदीना**

में दर्से निज़ामी का त़ालिबे इल्म हूं।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 193)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

विडियो गेम

मीठे मीठे म-दनी मुन्नो और म-दनी मुन्नियो !

देखा आप ने कि **विडियो गेम** की लत में मुब्तला बच्चे को जब दा'वते इस्लामी के **मद्र-सतुल मदीना** का म-दनी माह़ोल मिला तो वोह नेक नमाज़ी और परहेज़ गार "म-दनी मुन्ना" बन गया। आप भी दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से हमेशा वाबस्ता (Attach) रहिये। अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता आप **विडियो गेम** की आ़दत में मुब्तला हैं तो हाथों हाथ उस की आ़दत छुड़ाने की कोशिश कीजिये।

विडियो गेम के ज़रीए दीन व ईमान का नुक़्सान

बहुत कम म-दनी मुन्नों को इस बात का एह़सास होगा कि मुसल्मानों की नई नस्लों को तबाह करने के लिये दुश्मनाने इस्लाम ऐसी ऐसी गेम्ज़ तय्यार कर रहे हैं कि बच्चा खेल ही खेल में न सिर्फ़ अ़-मलन इस्लाम से दूर चला जाए बल्कि مَعَاذَاللّٰه उस के दिल में दीने इस्लाम ही की नफ़रत बैठ जाए म-सलन **विडियो गेम** खेलने वाला जिस क़िस्म के किरदारों को स्क्रीन पर देखता है उन में ऐसे किरदार भी शामिल होते हैं जिन के हाथों इस्लामी हुल्ये म-सलन दाढ़ी और टोपी या इमामे में मल्बूस "किरदारों" को मरवाया जाता है या फिर इस्लामी किरदारों को "दह्शत गर्द" के रूप में पेश किया जाता है, इस क़िस्म की गेमें खेलने वाले के दिल में

इस्लाम की **महब्बत** बढ़ेगी या कम होगी ! इस का जवाब आप खुद ही अपने ज़मीर से हासिल कीजिये।

विडियो गेम्ज़ से होने वाली बीमारियां

विडियो गेम्ज़ खेलने वाला नज़र की कमज़ोरी, पठ्ठों (Muscles) के खिंचाव और सर दर्द जैसे अमराज़ में मुब्तला हो सकता है।

विडियो गेम्ज़ की लरज़ा ख़ेज़ तबाह कारियां

हया सोज़ लिबास में मल्बूस **विडियो गेम** के किरदारों को देख देख कर बच्चों की ज़ेहनी पाकीज़गी बे हयाई के गन्दे नाले में डूब जाती है और बद निगाही का मरज़ उन की नस नस में उतर जाता है, "**विडियो गेम्ज़ क्लब**" पर मुनश्शियात फ़रोशों की "ख़ास नज़र" रहती है, कई बच्चे

और नौ जवान उन के चुंगल में फंस जाते हैं और बा'ज़ तो ऐसा फंसते हैं कि उन को उ़म्र भर रिहाई नसीब नहीं होती, ऐसे मक़ामात पर बच्चों से "गन्दे काम" किये जाते हैं ख़ुसूसन वोह बच्चे बदकार लोगों की हवस का शिकार बनते हैं जो घर वालों से छुप कर **विडियो गेम** खेलते हैं। मारधाड़ और क़त्लो ग़ारत गरी के मनाज़िर से भरपूर गेम खेल खेल कर बच्चों में रह़म दिली, सब्र, मुआ़फ़ी और दर गुज़र का जज़्बा कम या ख़त्म हो जाता है और देखी हुई चीज़ों का अ़-मली मुज़ा-हरा करने के शौक़ में कच्ची उ़म्र के नौ जवान (Teenager या'नी 13 से 19 साल वाले) लूटमार, चोरी चकारी, गन्दे कामों, ह़त्ता कि क़त्ल जैसे जराइम में मुलव्वस हो जाते हैं!

विडियो गेम्ज़ क़त्लो ग़ारत सिखाते हैं

विडियो गेम्ज़ अक्सर ज़ुल्म व तशद्दुद के मनाज़िर से भरपूर होते हैं, बा'ज़ गेमों में वोह लोग भी "हीरो" की फ़ायरिंग का निशाना बनते दिखाए जाते हैं जो घुटनों के बल बैठ कर गिड़-गिड़ाते हुए उस से रह़्म की दर-ख़्वास्त करते और मौत से बचने के लिये चीख़ो पुकार मचा रहे होते हैं, लेकिन **विडियो गेम** खेलने वाला फ़ाइनल राउन्ड तक पहुंचने के लिये उन सब को बन्दूक़ की गोलियों से भूनता हुवा आगे बढ़ता चला जाता है। हर त़रफ़ ख़ून ही ख़ून दिखाई देता है और गेम खेलने वाला इन तमाम मनाज़िर से लुत्फ़ अन्दोज़ होता है। बा'ज़ गेमों में "हीरो" कार (Car) में सुवार हो कर लोगों को कुचलता हुवा चला जाता है, बा'ज़ गेमों में इन्सान को ज़ब्ह करने और सर काटने के हैबत नाक मनाज़िर दिखाए

जाते हैं, बा'ज़ गेमों में मकानात और पुल बम धमाकों से उड़ाने के मनाज़िर दिखाए जाते हैं। क्या येह सब कुछ बच्चों के कच्चे ज़ेह्न के लिये नुक़्सान देह नहीं ? अगर येह कहा जाए तो शायद बे जा न होगा कि इस वक़्त मुआ़-शरे में तेज़ी के साथ बढ़ने वाले जराइम में **विडियो गेम्ज़** का निहायत गहरा तअ़ल्लुक़ है!

अमरीकियों का ए'तिराफ़

अमरीका में की गई एक रीसर्च के मुताबिक़ 80 फ़ीसद नौ जवान मारधाड़ और तशद्दुद से भरपूर गेम्ज़ खेलना पसन्द करते हैं। एक अमरीकी माहिरे नफ़्सियात का कहना है: "हम कम्पयूटर गेम को महज़ खेल समझते हैं लेकिन बद क़िस्मती की बात येह है कि येह हमारे मुआ़-शरे को ग़लत़

सम्त ले कर जा रहे हैं और हम अपने बच्चों को कम्पयूटर गेम के ज़रीए वोह सब कुछ सिखा रहे हैं जो किसी और त़रीक़े से बहुत देर में सीखा जा सकता है, कम्पयूटर की मदद से बच्चे न सिर्फ़ जदीद (या'नी नए) हथियारों के इस्ति'माल में महारत ह़ासिल कर लेते हैं बल्कि इस के साथ साथ वोह इन्सानों और दूसरे जानदारों को गोलियों का निशाना बनाना भी सीख लेते हैं।"

विडियो गेम्ज़ की नुहूसत के 14 इ़ब्रत नाक वाक़िआ़त

(लोगों और विडियो गेम्ज़ के नाम ह़ज़्फ़ कर दिये गए हैं)

❁ **कोलम्बियन** हाई स्कूल के 17 और 18 सालह दो[2] त़ालिबे इल्मों ने 20 अप्रील 1999 ई. को 12 स्टूडन्ट्स और एक टीचर को **क़त्ल** कर दिया, येह दोनों त़ालिबे इल्म एक **विडियो गेम** की लत में मुब्तला थे और इन्हों ने येह घिनाउना फ़े'ल उसी विडियो गेम के अन्दाज़ में किया

❁ अप्रील 2000 ई. में 16 सालह स्पेनिश (SPANISH) लड़के ने एक **विडियो गेम** के हीरो की नक़्ल करते हुए सचमुच अपने मां बाप और बहन को "काटाना तलवार" से क़त्ल कर दिया ! ❁ नवम्बर 2001 ई. में 21 सालह अमरीकी नौ जवान ने ख़ुदकुशी कर ली, उस की मां का कहना था कि वोह एक **विडियो गेम** को नशे की हद तक खेलता था ❁ फ़रवरी 2003 ई. में 16 सालह अमरीकी लड़के ने एक **विडियो गेम** से **मु-तअस्सिर** हो कर एक बच्ची को क़त्ल कर दिया ❁ 7 जून 2003 ई. को 18 सालह नौ जवान ने एक **विडियो गेम** से **मु-तअस्सिर** हो कर दो पोलीस वालों को गोली मार कर हलाक कर दिया, बिल आख़िर उसे चोरी की कार समेत गिरिफ़्तार कर लिया गया ❁ दो[2] अमरीकी सोतेले भाइयों ने जिन की उम्र 14 और 16 साल थी, 25 जून

2003 ई. को एक राइफ़ल के ज़रीए 45 सालह औ़रत को हलाक और 16 सालह लड़की को ज़ख़्मी कर दिया, येह दोनों एक गेम की नक़्ल कर रहे थे ❁ लेस्टर बरत़ानिया में 27 फ़रवरी 2007 ई. को 17 सालह नौ जवान ने 14 सालह लड़के को पार्क में ले जा कर हथोड़े (Hammer) और छुरी के पै दर पै वार कर के हलाक कर दिया, तह़क़ीक़ात से पता चला कि वोह एक **विडियो गेम** से **मु-तअस्सिर** था ❁ 27 दिसम्बर 2004 ई. को 13 सालह लड़के ने 24 मन्ज़िला इमारत से छलांग लगा कर ख़ुदकुशी कर ली, मौत से क़ब्ल वोह 36 घन्टे से मुसल्सल एक **विडियो गेम** खेल रहा था ❁ अगस्त 2005 ई. को "जनूबी कोरिया" का एक शख़्स 50 घन्टे तक मुसल्सल एक **विडियो गेम** खेलता रहा

और खेलते खेलते मौत का शिकार हो गया ❁ जनवरी 2006 ई. को टोरन्टो (केनेडा) की सड़कों पर 18 सालह दो नौ जवान लड़कों ने एक **विडियो गेम** की नक़्ल करते हुए कार की रेस की शर्त़ लगाई और इस रेस के दौरान होने वाले ह़ादिसे में एक टेक्सी ड्राइवर अपनी जान से हाथ धो बैठा ❁ सितम्बर 2007 ई. में चीन का एक शख़्स इन्टरनेट पर मुसल्सल तीन दिन से **ऑन लाइन गेम** खेलता रहा, बिल आख़िर खेल के इस नशे ने उस की जान ले ली ❁ दिसम्बर 2007 ई. में एक रूसी शख़्स ने एक **विडियो गेम** की त़रह़ सचमुच में फ़ायटिंग (या'नी मारधाड़) की शर्त़ रखी और इस झगड़े में मारा गया ❁ 14 अप्रील 2009 ई. को 9 सालह बच्चा जो कि ब्रोक्लन, न्यूयोर्क में रहता था एक गेम की

नक़्क़ाली करते हुए एक आ़रिज़ी पेराशूट ले कर छत से कूदा और मौत के घाट उतर गया ❁ मार्च 2010 ई. में तीन[3] सालह बच्ची अपने बाप की बन्दूक़ को गेम का "रीमोट" समझ कर चलाने लगी और एक गोली से उस की जान चली गई । (येह सब ख़बरें नेट पर **जनरेशन नेक्स्ट** ऑन लाइन मेगेज़ीन, अक्तूबर 2010 ई. से ली गई हैं)

मीठे मीठे म-दनी मुन्नो और मुन्नियो ! विडियो गेम्ज़ के दीनी व दुन्यवी नुक़्सानात आप ने पढ़े, अब अच्छे बच्चे बनते हुए हमेशा हमेशा के लिये विडियो गेम्ज़ खेलने से दूर रहने का ज़ेह्न बना लीजिये, इस में आख़िरत की भलाई के साथ साथ आप के पैसों और क़ीमती वक़्त की भी

बचत है । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तुझे तेरे प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वासित़ा ! मुसल्मानों को विडियो गेम देखने दिखाने की गन्दी आ़दत से छुटकारा अ़त़ा फ़रमा।

"विडियो गेमों" से ख़ुदाए पाक सब बच्चे बचें

नेकियां करते रहें अच्छे बनें सच्चे बनें

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

म-दनी फूल

चलने या सीढ़ी चढ़ने उतरने में येह एह़तियात़ कीजिये कि जूतों की आवाज़ पैदा न हो।

त़ालिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा का पड़ोस

7 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1434 सि.हि.

17-6-2013

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

म-दनी मुन्नों के लिये बहुत काम के **म-दनी फूल**

लैटे लैटे या चलते चलते या चलती गाड़ी में या धूप के अन्दर या बहुत तेज़ या बहुत कम रोशनी में किताब पढ़ने से नज़र कमज़ोर होती है। बा'ज़ म-दनी मुन्ने और म-दनी मुन्नियां एक दम झुक कर मुत़ा-लआ़ करने या लिखने या खाना खाने के आ़दी होते हैं, मेहरबानी कर के वोह अपनी आ़दत तब्दील करें वरना आंखें कमज़ोर, बदन के पट्ठे और फेफड़े ख़राब और कमर में तक्लीफ़ और झुकाव पैदा हो जाने का ख़त़रा है।

(येह म-दनी फूल बड़ों के लिये भी फ़ाएदा मन्द हैं)

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net